MANOBAL
A NEW BEGINNING
FOUNDATION

MANOBAL A NEW BEGINNING FOUNDATION

NEWSLETTER

JULY - SEPTEMBER 2025
ISSUE 06

वह लड़की जो अंधेरे में लौट गई

"2021 में, मैं मानव तस्करी विरोधी इकाई के साथ एक ऐसे मामले पर काम कर रही थी जो लगभग दो साल से हमें परेशान कर रहा था - मानव तस्करी से बचाए जाने के बाद एक आश्रय गृह से भागी लड़कियों की तलाश। एक दोपहर, मुझे एक मुखबिर का फोन आया। उसने कहा, "मैडम, जिस लड़की को आप ढूंढ रही थीं, वह शहर में है।"

हम तुरंत उस स्थान पर पहुँचे, और कई दिनों की खोज के बाद, हमें आखिरकार वह लड़की मिल गई। लेकिन जिस बात ने मुझे अवाक कर दिया, वह यह जानकर थी कि जिस मुखबिर ने यह जानकारी दी थी, वह वही लड़की थी जिसे मैंने 2017 में बचाया था - एक ऐसी लड़की जो खुद कभी मानव तस्करी का शिकार हुई थी और वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर हुई थी।

उसका नाम शीला (बदला हुआ नाम) था। मैंने उसे दिल्ली के जीबी रोड स्थित एक वेश्यालय से बचाया था, जब वह सिर्फ़ 16 या 17 साल की थी - एक नाबालिग नेपाली लड़की जिसे वेश्यावृत्ति के लिए बेच दिया गया था। उस बचाव अभियान के दौरान, हमने कुल 25 लड़कियों को मुक्त कराया था, सभी नेपाल की थीं और सभी उसी भयानक धंधे की शिकार थीं। शीला ने ही हमें बाकी लड़कियों को ढूँढ़ने में मदद की थी। उसके साहस के लिए, उसे सार्वजनिक रूप से सम्मानित भी किया गया था। उसे गर्व था कि उसने लोगों की जान बचाने में मदद की, और मुझे भी उस पर गर्व था।

बचाव के बाद, शीला नेपाल वापस भेजे जाने से पहले भारत में एक आश्रय गृह में रही। वहाँ उसे एक पुनर्वास केंद्र में नौकरी मिल गई और उसने अपना जीवन फिर से संवारना शुरू कर दिया। हम अक्सर बात करते थे - ज़्यादातर सुबह 5 बजे, जब काम से पहले उसके पास कुछ पल होते थे। उसकी आवाज़ उज्ज्वल और आशा से भरी थी। वह अपने सपनों, अपनी नई दिनचर्या और अपनी नई आज़ादी के बारे में बात करती थी।

लेकिन ज़िंदगी, जैसा कि मुझे बाद में एहसास हुआ, कुछ और ही सोच रही थी।

2023 तक, हमारी बातचीत बंद हो गई थी। उसने मुझे अपने फ़ोन और सोशल मीडिया पर ब्लॉक कर दिया था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्यों। मैंने खुद से कहा कि शायद वह आगे बढ़ना चाहती है—अपने अतीत के साये से मुक्त होकर एक नई ज़िंदगी शुरू करना चाहती है। मैं

उसके लिए यही चाहता थी।

एक साल बाद, प्रोजेक्ट मनोबल के साथ काम करते हुए, हम शहर के एक रेड-लाइट इलाके में होली का जश्न मना रहे थे। यह हमारी सामाजिक कल्याण पहल का हिस्सा है—हम समाज के सबसे अँधेरे कोनों में रोशनी लाने के लिए जागरूकता कार्यक्रम, मानसिक स्वास्थ्य सत्र और त्योहार समारोह आयोजित करते हैं।

उस दिन, रंगों और हँसी के बीच, मैंने गुलाबी साड़ी पहने एक लड़की को देखा, जिसका चेहरा आधा ढका हुआ था। उसकी नज़रें मेरी नज़रों से मिलीं—ऐसी नज़रें जिन्हें मैं कभी नहीं भूल सकती। मैं स्तब्ध गई।

वह शीला थी।

जब मैंने उसका नाम ज़ोर से पुकारा, तो वह पीछे हट गई, फिर एक छोटे से कमरे में भाग गई। मैं उसके पीछे गया। जब मैं अंदर गई, तो उसने मुझे कसकर गले लगा लिया और रोने लगी। मैं अपने आँसू नहीं रोक पाई। कुछ मिनटों तक हम दोनों वहीं खड़े रहे - कोई शब्द नहीं, केवल आंसू जो वर्षों के दर्द, अपराधबोध और लाचारी को समेटे हुए थे।

“दीदी, मैं लाचार थी...”

जब हम आखिरकार शांत हुए, तो शीला बोली। “दीदी, मैं लाचार थी। मुझे वापस आना पड़ा। मेरे परिवार का ख्याल रखने वाला कोई नहीं था। मेरी छोटी बहन की शादी करनी है। हम पर कर्ज़ है... बहुत सारी ज़िम्मेदारियाँ हैं।”

उसके शब्द मेरे अंदर तक चुभ गए। मैं कुछ कहना चाहती थी – कुछ भी – लेकिन मैं कह नहीं पाई। बस यही शब्द निकले: “जब भी तुम्हें लगे कि मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकती हूँ, मैं तुम्हारे लिए मौजूद हूँ।”

उस मुलाकात के बाद, मैं रातों को सो नहीं पाई। मेरे मन में कई सवाल उठे। हमने उसे बचा तो लिया था – लेकिन क्या हमने सचमुच उसका पुनर्वास किया? हमने उसे सुरक्षा दी – लेकिन क्या हमने उसे एक भविष्य दिया? हम कहाँ चूक गए? क्या यह व्यवस्था थी, परिवार था, या समाज था?

आँकड़ों के पीछे छिपे सच

भारत के राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के अनुसार, 2023 में मानव तस्करी के 6,500 से ज़्यादा मामले दर्ज किए गए, जिनमें हज़ारों पीड़ित महिलाएँ और बच्चे थे। इनमें से कई पीड़ित नेपाल और बांग्लादेश जैसे पड़ोसी देशों से तस्करी करके लाए गए थे। अध्ययनों से पता चलता है कि मानव तस्करी से बचे लगभग तीन में से एक व्यक्ति की फिर से तस्करी की जाती है, अक्सर पारिवारिक सहयोग की कमी, आर्थिक कमज़ोरी और सामाजिक कलंक के कारण, जिससे उन्हें शोषण या वेश्यावृत्ति में वापस धकेल दिया जाता है।

शीला की कहानी अनोखी नहीं है। यह उस दर्दनाक सच्चाई को दर्शाती है कि बचाव तो बस पहला कदम है। असली लड़ाई उसके बाद शुरू होती है - पुनः एकीकरण और स्वीकृति की।

ग्रामीण नेपाल और भारत में, पीड़ितों को अक्सर अपने ही परिवारों द्वारा अस्वीकार कर दिया जाता है। उन्हें "कलंकित" और परिवार के योग्य नहीं समझा जाता। नौकरी, समर्थन या स्वीकृति के बिना, कई लड़कियों को उसी अंधेरे में धकेल दिया जाता है जिससे बचने के लिए उन्होंने संघर्ष किया था।

जब जीत भी असफलता जैसी लगे

यह लिखते हुए, मुझे अभी भी शीला की कहानी को असफल कहने में मुश्किल हो रही है—क्योंकि वह असफल नहीं थी। वह बहादुर, दृढ़ और आशावान थी। लेकिन व्यवस्था ने उसे निराश किया। समाज ने उसे निराश किया। और कहीं न कहीं, मुझे लगता है कि मैंने भी ऐसा ही किया।

बचाव अभियान हमें विजय के क्षण देते हैं—ऐसे जो सुर्खियाँ बनते हैं। लेकिन पुनर्वास ही असली काम है, और जहाँ ज़्यादातर कहानियाँ चुपचाप बिखर जाती हैं।

मानव तस्करी के खिलाफ हमारी लड़ाई में, हमें याद रखना चाहिए: बचाव ही काफी नहीं है—पुनः एकीकरण ही जीवन है।

हर शीला जिसका हम समर्थन करने में विफल रहते हैं, हमें याद दिलाती है कि हमें बेहतर करना होगा—न केवल कानूनों या अभियानों में, बल्कि मानवता के मामले में भी।

क्योंकि कभी-कभी, जीत ज़ोरदार होती है, लेकिन असफलताएँ और भी ज़ोर से फुसफुसाती हैं—हमें याद दिलाती हैं कि आज़ादी की यात्रा बचाव के साथ खत्म नहीं होती; बल्कि वहीं से शुरू होती है।”

Nirmala B Walter
Founder and Social Worker
Manobal A New Beginning Foundation

आभास

जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से रोकथाम

दिल्ली के 20 से अधिक सरकारी स्कूलों में जागरूकता सत्र आयोजित

सिवनी, मध्य प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों के 35 से अधिक सरकारी स्कूलों में जागरूकता सत्र आयोजित किए गए

यूथलाइट के साथ स्कूल जागरूकता कार्यक्रम पूर्णिया, बिहार में

पुणे, महाराष्ट्र के आशा केयर ट्रस्ट के साथ स्कूलों में जागरूकता कार्यक्रम

मानव तस्करी के विरुद्ध विश्व दिवस

निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन दिल्ली

श्रद्धानंद मार्ग,
कमला मार्केट पुलिस स्टेशन दिल्ली

जबलपुर रेलवे स्टेशन मध्य प्रदेश

मेडिकल कॉलेज सिवनी, मध्य प्रदेश

बचाव, पुनर्वास और प्रत्यावर्तन

नेपाल में सफल प्रत्यावर्तन

बचाव के बाद, उसे सफलतापूर्वक बहाल कर दिया गया

बचाव के बाद, उसे पश्चिम बंगाल में सफलतापूर्वक बहाल कर दिया गया

शिक्षा और आजीविका के माध्यम से पीड़ितों का पुनर्वास

मनोबल इंटर्नशिप कार्यक्रम

जेआईएमएस कॉलेज के छात्रों के साथ मनोबल इंटर्नशिप कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ, जिसमें फोरेंसिक मनोविज्ञान, कानून प्रवर्तन, मानसिक स्वास्थ्य और मानवाधिकारों के व्यावहारिक अनुप्रयोगों पर ध्यान केंद्रित किया गया। कार्यक्रम के विविध सत्रों ने छात्रों को उनके भविष्य के करियर के लिए बहुमूल्य ज्ञान और कौशल हासिल करने में मदद की।

वेश्यालय में सामाजिक कल्याण कार्यक्रम

जेआईएमएस कॉलेज के छात्रों ने मनोबल इंटर्नशिप कार्यक्रम के तहत कल्याण को बढ़ावा देने के लिए मानसिक स्वास्थ्य परामर्श सत्र और आकर्षक गतिविधियाँ आयोजित कीं।

वेश्यालय में मानसिक स्वास्थ्य सत्रों के माध्यम से हमारा उद्देश्य महिलाओं को आराम, उपचार और आशा प्रदान करना था - जिससे उन्हें भावनात्मक पीड़ा से उबरने और सम्मान के साथ समाज में वापस आने में मदद मिल सके।

सेक्स वर्कर समुदाय के साथ दशहरा उत्सव मनाते हुए। उत्सव के दौरान, हमने एक फ़ैशन शो का आयोजन किया, जहाँ सभी प्रतिभागियों ने खुशी-खुशी रैंप वॉक किया और उपहार प्राप्त किए। यह खुशी, सम्मान और एकजुटता की भावना से भरा एक खूबसूरत पल था।

मनोबल ट्यूशन सेंटर

ट्यूशन सेंटरों में मानसिक स्वास्थ्य सत्र आयोजित किए गए, ताकि विद्यार्थियों को यह सीखने में मदद मिल सके कि पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करते हुए वे अपने मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान कैसे रख सकते हैं।

ट्यूशन सेंटर में परामर्श सत्र ने विद्यार्थियों को अपनी चिंताओं को साझा करने तथा मिलकर समाधान तलाशने के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान किया।

नैतिक मूल्यों पर आधारित सत्र के दौरान विद्यार्थियों ने सीखा कि समय बहुमूल्य है और इसका बुद्धिमानी से उपयोग करना सफलता की कुंजी है।

छात्रों को शारीरिक स्वास्थ्य बनाए रखने के बारे में शिक्षित करने के लिए ट्यूशन सेंटरों में स्वच्छता सत्र आयोजित किए गए तथा साबुन, टूथब्रश और टूथपेस्ट सहित स्वच्छता किट वितरित किए गए।

स्वतंत्रता दिवस मनाते हुए

केंद्र में लड़कियों का जन्मदिन समारोह

अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाना

मानसिक स्वास्थ्य के महत्व पर चर्चा करने के लिए छात्रों के अभिभावकों के लिए एक मानसिक स्वास्थ्य सत्र आयोजित किया गया।

रचनात्मक तरीके से अंग्रेजी सीखने में खुशी हो रही है।

2 अक्टूबर को महात्मा गांधी का जन्मदिन श्रमदान के माध्यम से ट्यूशन सेंटर की सफाई करके मनाया गया।

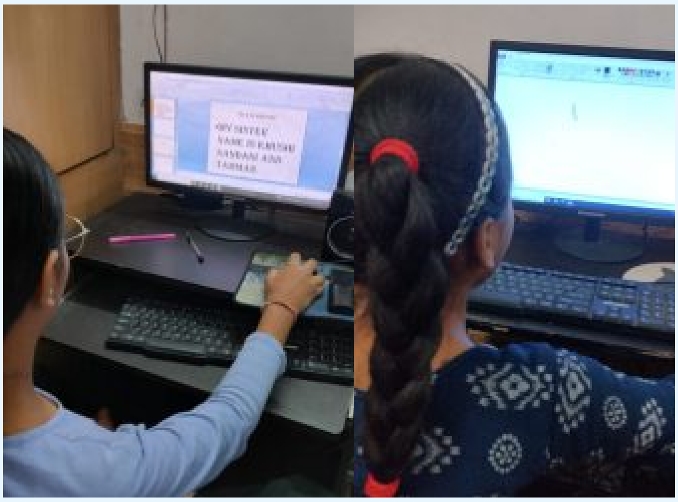

डिजिटल साक्षरता

'निक्षय पोषण योजना' के अंतर्गत, मनोबल ने लखनादौन, मध्य प्रदेश में तपेदिक से प्रभावित 8 बच्चों को पोषण सहायता प्रदान की।

वह सामाजिक कार्यकर्ता जिसने 200 से अधिक तस्करी की शिकार महिलाओं को बचाया है

सामाजिक कार्यकर्ता निर्मला वाल्टर दिल्ली के रेड लाइट एरिया के वेश्यालयों में छापेमारी कर तस्करी की शिकार महिलाओं और लड़कियों को बचाती हैं। यह काम कभी-कभी खतरनाक और अक्सर चुनौतीपूर्ण होता है, जिससे उन्हें भारत में देह व्यापार की वास्तविकताओं का सामना करना पड़ता है। निर्मला का काम करने का तरीका अनोखा है: वह तस्करी के शिकार लोगों की तलाश में कभी नहीं रुकतीं, चाहे कितनी भी मुश्किलें क्यों न हों या कितना भी समय क्यों न लगे। अब तक, उन्होंने 200 से ज़्यादा लोगों को बचाया है।

निर्मला के साक्षात्कार का अनुवाद उनके बेटे अरहान वाल्टर ने किया है और अंग्रेजी में उनकी आवाज़ रुचिका जैन ने दी है।

Cheques and DDs in favur of **Manobal A New Beginning Foundation**
Canara Bank, Lakhnadon Seoni MP
IFSC Code - **CNRB0005572**, Account number - **120002429066**
All donations sent to **Manobal A New Beginning Foundation**
are exempted under section 80(G) of the IT Act of 1961.

Follow us on

DELHI OFFICE:
RZ-122, STREET NO. 03, PALAM - DABRI MARG, VAISHALI, NEW DELHI-110045
+91 98112 18089 INFO@MANOBAL.COM WWW.MANOBAL.COM